Indian J. Soc & Pol. 03(01): 2016 :113-114 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

अवस्थाओं में वृद्धि व विकास के नियम

सुरेखा जायसवाल[1]
[1]विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञानविभाग,अवधूत भगवान राम पी जी कालेज अनपरा, सोनभद्र उ0प्र0

ABSTRACT

विकास एक सार्वभौमिक प्रकिया है जो हर प्राणी में पाई जाती है। विकास का शुभारम्भ जन्म से पूर्व गर्भाधान में दो सप्ताह बाद से हो जाता है और मृत्यु के पूर्व तक जारी रहता इसमें निरन्तरता देखी जाती है। व्यक्ति के जीवन काल में आने वाले सभी शारीरिक और मानसिक परिवर्तन ही विकास है। जीवन की आरम्भिक अवस्थाओं में विकास के कारण अभिवृद्धि, उन्नति और प्रगति आती है। यह परिवर्तन रचनात्मक होते है इनके कारण आकार भार शरीर के अनुपातों आदि में वृद्धि आती है जबकि जीवन की अन्तिम अवस्थाओं में विकास के कारण से परिवर्तन आते है वे व्यक्ति को पतन, हास्य क्षीणता आदि की ओर अग्रसर करते है। गर्भावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त तक व्यक्ति में परिवर्तन होते रहते है बालक जन्म लेने के पश्चात शैशवकाल में आता है इसके बाद बाल्यकाल, किशोरकाल और प्रौढावस्था में प्रवेश करता है इन सभी अवस्थाओं में परिवर्तन आते है जिनका प्रमुख आधार विकास होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में विकास के इन्हीं नियमों पर दृष्टि डालनें का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS: *वाल्यावस्था, शैशवास्था, बृद्धावस्था, विकास, गर्भाधान,*

विकास एक सार्वभौमिक प्रकिया है जो हर प्राणी में पाई जाती है। विकास का शुभारम्भ जन्म से पूर्व गर्भाधान में दो सप्ताह बाद से हो जाता है और मृत्यु के पूर्व तक जारी रहता इसमें निरन्तरता देखी जाती है। व्यक्ति के जीवन काल में आने वाले सभी शारीरिक और मानसिक परिवर्तन ही विकास है। जीवन की आरम्भिक अवस्थाओं में विकास के कारण अभिवृद्धि, उन्नति और प्रगति आती है। यह परिवर्तन रचनात्मक होते है इनके कारण आकार भार शरीर के अनुपातों आदि में वृद्धि आती है जबकि जीवन की अन्तिम अवस्थाओं में विकास के कारण से परिवर्तन आते है वे व्यक्ति को पतन, हास्य क्षीणता आदि की ओर अग्रसर करते है। वृद्धावस्था में परिवर्तन विध्वंसकारी होते है, क्योकि इसके अर्न्तगत अंग लुप्त होने लगते है दॉतों का गिरना, थाइमस तथा पीनियल ग्रंथियों का ह्रास के साथ ही मानसिक क्षमताओं के ह्रास के लक्षण भी उदभूत होने लगता है।

विकास के अर्न्तगत आए परिवर्तनों में एक विशेषता और भी पाई जाती है यह मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनो प्रकार के होते है (हरलॉक 1968) उदाहरण के लिए बालक के भार तथा मोटाई में परिवर्तन (वृद्धि या कमी) मात्रात्मक कहा जायेगा।

विकास एक शारीरिक पक्ष है इसमे अर्न्तगत गर्भावस्ता से लेकर परिपक्वता तक का समग्र अध्ययन किया जाता है। प्रारम्भ में केवल स्कूल जाने के पहले की आयु के बच्चो के विकास में रूचि ली जाने लगी इसके पश्चात नवजात शिशु और जन्म से पहले की उसकी अवस्था पर भी ध्यान दिया जाने लगा। प्रथम विश्व युद्ध (1914) के बाद किशोरावस्था के विषय में किये गए खोज पूर्ण अध्ययन उतरोत्तर अधिक संख्या में प्रकाशित होने लगें। द्वितीय विश्व युद्ध (1939) के पश्चात प्रौढ़ावस्था तथा जीवन के उत्तरकालीन वर्षो पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

आज विश्व में मानव विकास के साथ–साथ उसमें मनोवैज्ञानिक पक्ष का अध्ययन दिया जा रहा है मानव विकास का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष बाल विकास है। हरलॉक के अनुसार– ''आधुनिक समय में बाल विकास में मुख्यतः बालक के रूप, व्यवहार रूचियों और उददेश्यों में घटित होने वाले उन विशिष्ट परिवर्तनों की खोज पर ध्यान दिया जाता है।

विकास का अर्थ है परिवर्तन! मानव जीवन अविराम परिवर्तनों का ही नाम है जीवन के विभिन्न अवस्थाओं के अर्न्तगत आने वाले सभी गुणात्मक परिवर्तन मानव विकास के अर्न्तगत आते है व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन काल में कभी स्थित नहीं रहता। विकास कम में नयी विशेषताओं का अविर्भाव और अनेक पुरानी विशेषताओं का लोप होता है। वैज्ञानिक दृष्टि से उन परिवर्तनों, विशेषताओं और गुणो की क्रमिक एवं नियमित उत्पत्ति को विकास कहा जाता है। गैसेल के अनुसार–''विकास एक तरह का परिवर्तन है, जिससे बच्चो में नवीन विशेषताओं एवं क्षमताओ का विकास होता है सुसम्बद्धता विकास की एक अन्य विशेषता है। इसकी अभिप्राय यह है कि विकास कम में होने वाले परिवर्तनों में सुसंगति एवं सुसम्बद्धता देखी जाती है। बहुधा जिस बच्चे का कियात्मक विकास शीघ्र होता है, विकास के विविध पक्ष और स्वरूप सुसम्बदता अथवा सार्थक रूप के आपस में जुड़े होते है।

विकास के नियम– विकास एक निरन्तर चलने वाली प्रकिया है जिसमें कुछ नियमों के अनुसार बालको में शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होते है। विकास के कुछ प्रयुत्व नियम निम्न प्रकार से है–

विकास अवस्थाओं के द्वारा अग्रसर होती है– ये अवस्थाये विकास अवस्थाये कहलाती है। प्रत्येक विकास अवस्था

1: Corresponding Author

की कुछ अपनी प्रमुख विशेषतायें होती है जो उस विकास अवस्था दूसरी से भिन्न रखती है।

कुछ प्रमुख अवस्थाए निम्न प्रकार से है–

- **गर्भकालीन अवस्था–** यह गर्मधारण से जन्म तक की अवस्था है। इस अवस्था में विकास की गति तीव्र होती है। अधिकांश विकास शिशु के शरीर में होते है। इस अवस्था की विकास प्रक्रियाओं की अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस अवस्था की तीन उप–अवस्थाएँ है–

  (अ) बीजावस्था–

  (ब) भ्रूणावस्था–

  (स) गर्भस्थ शिशु की अवस्था–

1. **शैशवावस्था–** यह जन्म से 14 दिन की अवस्था है। इस अवस्था में शिशु को नवजात शिशु कहते है। इस अवस्था के बालक पूर्णतः नये वातावरण में समायोजित करना पड़ता है।
2. **बचपनावस्था–** यह अवस्था दो सप्ताह से दो वर्ष तक की अवस्था है। इस अवस्था के प्रारम्भ में बालक पूर्णतः असहाय होता है और अपनी आवश्यकताओ के लिए दूसरो पर निर्भर होता है।
3. **बाल्यावस्था–** तीसरे वर्ष से प्रारम्भ व ग्यारह बारह वर्ष तक की अवस्था है। इस अवस्था को दो उप अवस्था में बाटा गया है। छः वर्ष की अवस्था पूर्व बाल्यकाल व छः से बारह वर्ष की अवस्था उत्तर बाल्यकाल बाल्यावस्था है।
4. **वयः सन्धि–** इसका कुछ भाग उत्तर बाल्यावस्था व कुछ भाग किशोरावस्था में पड़ता है। लड़कियो में ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक व लड़को में यह बारह से सोलह वर्ष तक की अवस्था है।
5. **किशोरावस्था–** बाल जीवन की यह अन्तिम अवस्था है यह तेरह चौदह वर्ष से इक्कीस वर्ष तक की अवस्था है। विकास की इस अवस्था को कुछ लोग स्वर्ण आयु भी कहते है।
6. **प्रौढ़ावस्था–** यह इक्कीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था है। यह कर्तव्यो उत्तरदायित्वो और उपलब्धियो की अवस्था है ।

निष्कर्ष

विकास अनवरत चलने वाली क्रमिक प्रगतिशील सुसम्बद्ध परिवर्तनो की एक श्रृंखला है। ये परिवर्तनो के लक्षण अवस्था के परिवर्तित होने पर बदल जाते है जब बालक का विकास प्रतिमान सामान्य होता है तब एक विकास अवस्था बालक को दूसरी विकास अवस्था के लिए तैयार करती है। प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताये होती है। जो उस विकास अवस्था को दूसरे से भिन्न करती है। प्रत्येक पक्ष में पृथक–पृथक अंगों व शक्तियों का विकास होता है। अतः विकास की अवधि में सुखद व दुखद दोनो प्रकार की अनुभूतियॉ होती है। सुखद परिवर्तनो के प्रति अनुकूल व दुखद परिवर्तनो के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्तिया निर्मित होती है। इसलिए व्यक्ति के भीतर विभिन्न प्रकार के शारीरिक मानसिक व संवेगात्मक रूप से क्रमिक परिवर्तनो की उत्पत्ति ही '' विकास वृद्धि'' है।

सन्दर्भ

श्रीवास्तव, एन0 : *बाल मनोविज्ञान बाल विकास,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स,

पाठक, पी0डी0: *शिक्षा मनोविज्ञान,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स,

शर्मा एवम् शर्माः *बाल विकास,* स्टार पब्लिकेशन्स,

जैन,शशिप्रभाः *मानव विकास परिचय,* शिवा प्रकाशन,